1

परेशान मनों के लिए मरहम

(यूहन्ना 14)

''तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो तो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने आता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो'' (आयतें 1-3)।

यीशु ने अपने प्रेरितों पर प्रगट कर दिया था कि वह उन्हें छोड़ देगा। उसने बताया था ''मेरा अपने पिता के पास जाने का समय आ चुका'' (देखें 14:12)। उनके लिए यह समाचार चौंकाने वाला था। वे उसकी सांसारिक उपस्थिति पर भरोसा रखते थे। उसके साथ वे आश्वस्त थे, उसके बिना उन्होंने भटकना था। इस खामोशी को तोड़ते हुए जो इससे छाई होगी, पतरस ने उससे पूछा, ''प्रभु तू कहां जाता है?'' उसे बताया गया, ''जहां मैं जाता हूं, वहां तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे आएगा'' (13:36)। उसकी बातों को न समझते हुए पतरस ने सवाल किया, ''प्रभु अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं चल सकता? मैं तेरे लिए अपनी जान भी दे दूंगा।'' एक अर्थ में यीशु ने उत्तर दिया, ''नहीं, तू जान नहीं देगा। इस रात के बीतने से पहले तू मेरा इनकार करेगा।''

यीशु की बातें उसके प्रेरितों के मनों पर बड़े ज़ोरदार प्रहार के रूप में पड़ीं। इस सारी बातचीत के दौरान जो यीशु ने यहूदा और पतरस (देखें 13:21-38) के बारे में कही, सारे चेले सकते में आ गए और बहुत डर और भ्रम में पड़ गए। यह सोचकर कि उनमें से एक यीशु को पकड़वाएगा, यीशु पिता के पास जाएगा और उसने पतरस के बारे में जो ऐलान किया था कि कैसे वह उसका इनकार करेगा, पतरस जो चेलों में सबसे फुर्तीला और बड़बोला था यह सब सोचकर चेलों को कंपकंपी लग गई।

उस रात की कालिमा उनके दिलों में छा गई। उन्हें आश्वासन देने वाली एक रोशनी की आवश्यकता थी। यीशु ने विचलित मनों को कैसे शान्त किया? हम यह मान सकते हैं कि उसने जो उन्हें दिया, हमें भी दिया है।

मानने के लिए एक विश्वास

उसने उन्हें विश्वास को मानने का प्रस्ताव दिया। उसने उन्हें परमेश्वर में और उसमें भी विश्वास करने को कहा। उसने उन्हें दो आदेश दिए *''परमेश्वर में विश्वास रखो और मुझमें भी विश्वास रखो''* (14:1)। यह उनके लिए संदेह करने का समय नहीं था। चाहे उन्हें पूरी तरह समझ न आया हो; लेकिन उसे ध्यान में रखते हुए जिसका परमेश्वर को और यीशु को पता था, उन्हें विश्वास हो सकता था। पीछे देखते हुए, उन्हें ऐसा कोई भी समय याद नहीं आ रहा था,

जिसमें उन्होंने असफलता का मुंह देखा हो। परमेश्वर और यीशु ने पिछले समय में भी उनकी अगुआई की थी और उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया था। अब भी इस विपदा के समय में जो आगे आन पड़ी थी, वही उनकी अगुआई करेंगे और सम्भालेंगे।

जब काली रात के साए हमें चारों तरफ से घेर लें–जब उत्तर थोड़े हों और हमारी आंखों के आसुंओं के कारण भविष्य धुंधला नज़र आता हो, तब भी हमें विश्वास करते रहना चाहिए। हमारे रास्ते में जो रुकावटें आती हैं, परमेश्वर उनमें से भी रास्ता निकालना जानता है। यीशु थामे रखेगा यदि हम उसे थामे रहेंगे।

देखने के लिए एक भविष्य

यीशु ने उन्हें भविष्य का दर्शन करवाया। उसने उन्हें आने वाली एकता का पूर्वानुमान लगाने को कहा। उसने विश्वासी के सुन्दर भविष्य का संकेत दिया। उसने कहा, ''मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने आता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने वहां ले जाऊंगा'' (14:2, 3क)। यीशु अपने पिता के पास रहने के लिए बहुत से मकान बनाने जा रहा था। उसका यह वादा है कि वहां सबके लिए रहने का स्थान होगा। आने वाले समय में बहुत से चेले उसके पीछे चलेंगे और उन सब के लिए वहां बहुत सी जगह होगी।

कठिन समयों में हमें यह याद रखना चाहिए कि यह संसार हमारा पक्का निवास नहीं है। हम यहां मुसाफ़िर हैं, मज़दूर हैं, जो कुछ समय के लिए यहां हैं और फिर चले जाएंगे। किसी ने कहा है, ''हम इस संसार के निवासी नहीं, जो स्वर्ग में जाने के प्रयास में है, बल्कि स्वर्ग के निवासी हैं जो इस संसार में से होकर जाने की कोशिश करते हैं।'' हम तब तक पृथ्वी के अपने दुखों और कष्टों को झेलने में असमर्थ रहते हैं, जब तक विश्वास के द्वारा हमारे मनों में हमारे स्थाई घर की तस्वीर स्पष्ट न हो।

उम्मीद की जाने वाली संगति

यीशु ने हमें संगति की आशा दी है। उसने हमें आने वाले पुनर्मिलन की खुशी मनाने को कहा है। उसने अपने चेलों को याद दिलाया कि उनकी जुदाई सदा तक की नहीं होगी। यह अस्थाई होगी। वह उन्हें उसी स्थान पर ले आएगा, जहां वह खुद जा रहा था, क्योंकि जहां वह होगा, वहां वे भी होंगे।

स्वर्ग की आशा और भी उज्ज्वल हो उठती है, जब हमें उस संगति की याद आती है, जो वहां होगी। हम केवल एक जगह पर ही नहीं जा रहे; हमारा पुनर्मिलन होगा। पुनर्मिलन की कीमत उस स्थान से नहीं लगाई जाती। जहां यह होने जा रहा है, बल्कि इससे कि किसके साथ है। स्वर्ग की सुन्दरता ऐसी है, जिसकी कल्पना हमारे मन भी नहीं कर सकते; लेकिन जो संगति वहां होगी, उसकी खुशी इसकी सुन्दरता को दोगुनी और चौगुनी करेगी। यूहन्ना ने लिखा:

> फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। और वह उनकी आंखों से

सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं (प्रकाशितवाक्य 21:3, 4)।

क्या आप परमेश्वर के इतना नज़दीक होने की कल्पना कर सकते हैं, जहां वह खुद तुम्हारी आंखों से आंसुओं को पोंछ लेगा?

सारांश

जब दिन अंधेरे हों और हमारे दिल दुखी और घबराए हुए हों, तब हम उस दिलासे के लिए जिसकी हमारी आत्मा को लालसा है किसके पास जाएं? यीशु हमें अपने पास आने का आमंत्रण देते हुए कहता है ''तुम्हारा मन न घबराए।'' वह चाहता है कि हम उसकी वफादारी पर विश्वास रखें, और उस भविष्य का पूर्वानुमान लगाएं जो उसने बचाए हुओं के लिए रखा है, और उस आने वाली अद्‌भुत संगति की खुशी मनाएं।

यिर्मयाह ने पूछा, ''क्या गिलाद देश में कुछ बलसान की औषधि नहीं? क्या उस में कोई वैद्य नहीं? यदि है तो मेरे लोगों के घाव क्यों चंगे नहीं हुए?'' (यिर्मयाह 8:22)। उसके शब्दों को थोड़ा बदलते हुए हम पूछें, ''क्या दुखी हृदयों के लिए कोई मरहम नहीं है? क्या कोई भी ऐसा वैद्य नहीं है जो जख्मी आत्मा का इलाज कर सके? परमेश्वर के लोग निराश और दुखी होने से कैसे बच सकते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर साफ ही है; यह एक शब्द में हैं: यीशु! वह हमारा मरहम, हमारा सबसे बड़ा वैद्य है। वह आशा, उम्मीद और ताज़गी देता है, जिसकी किसी भी मुसाफ़िर को जब भी आवश्यकता होती है। वह स्थायी विश्वास जो हमारा उस पर है, वो सदीपक भविष्य जो उसके द्वारा है, और वो सुन्दर संगति जो हमारी उसके साथ है: यह हमें जीवित रखती है। हमारे पास यह सब और स्वर्ग भी।

''बिना मार्ग के, चलना नहीं होता; बिना सत्य के, ज्ञान नहीं होता, बिना जीवन के, जीना नहीं होता। वह मार्ग, जिस पर तुम्हें चलना होगा; वह सत्य, जिस पर भरोसा करना, जीवन, जिसकी आशा होनी चाहिए मैं ही हूं।

''अनुल्लंघनीय [जिसे कभी तोड़ा न जा सके] मार्ग, अटल सच्चाई, अमिट जीवन मैं हूं,

''सीधा मार्ग, सर्वोच्च, सत्य, धन्य, अनिर्मित जीवन मैं हूं।

''यदि तुम मेरे मार्ग पर चलते रहो, तो तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा और तुम अनन्त जीवन को पा लोगे।''[1]

टिप्पणी

[1]थॉमस ए केम्पिस, *ऑफ़ द लिमिटेशन आफ़ क्राइस्ट* (न्यू कैनान, कनेक्टिकट: कीट्स पब्लिशिंग, 1982), 237–38.